तीसरी कसम

अनीता भारती
मो. 9899700767

'माँ, **मैं** स्कूल नहीं जाऊँगी।' मीनू ने रोते हुए कहा।

'क्यों, क्यों स्कूल नहीं जाएगी?' ..रमैनी ने गुस्से से कहा।

'माँ वो मुझे कभी आगे नहीं बैठने देते, कहते हैं तू सबसे पीछे बैठ, मेरी मास्टरनी भी कहती है, हमारी बस्ती के बच्चे गंदे होते हैं।' ...मीनू ने सुबकते हुए कहा।

मीनू की बात सुन रमैनी को अपना अतीत याद आ गया। ऐसे ही एक दिन वह भी अपने बापू से बोली थी 'बापू, मैं स्कूल नहीं जाऊँगी।'

राधे ने हैरानी से पूछा था, 'क्यों बेटी?'

'बापू, वो मुझे सबसे पीछे बैठाते हैं, पीछे बैठकर मेरा पढ़ने में मन नहीं लगता, बहिनजी भी मुझे गोबर गणेश कहती हैं, बच्चे मुझे देखकर हँसते हैं, कहते हैं, अरी ओ रमैनी नौटंकिया, नौटंकी दिखा।'

रमैनी को समझाते हुए राधे बोला, 'बेटी, बच्चे तो एक दूसरे को चिढ़ाते ही हैं तू भी उनको चिढ़ा दे। मेरी बेटी झलकारी बाई की तरह बहादुर है। किसी से डरती थोड़े ही है।' फिर बापू ने प्यार से रमैनी के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, 'पढ़ने से मत रुकियो, बेटी।' पर रमैनी का गुस्सा शांत नहीं हुआ। वह गुस्से से बोली, 'बस मैंने कह दिया अब मैं स्कूल नहीं जाऊँगी। मेरे लिए जीजी से कहकर एक हारमोनियम मँगा दो। मैं भी गाना सीखूँगी।'

बाप-बेटी की बात सुन दुःख में डूब गया। वह जिस जात से है, वहाँ के बच्चे पढ़ क्यों नहीं पाते, यह छोटी-सी बात उसकी बुद्धि से परे थी। वह रात-दिन कोल्हू के बैल की तरह जुतकर अपनी थोड़ी-सी खेतीबाड़ी से घर का खर्चा चला रहा था। घर भी क्या था, एक टूटी चारपाई, एक मैला कुचैला तकिया, तार-तार हो चुका चिथड़े-सा बिछौना। पूरे कमरे में अंधेरे के साम्राज्य से लड़ती धुआँ छोड़ती ढिबरी और कोने में रखी छोटी-सी मटकी। कहते हैं—बिन घरनी, घर भूत का डेरा। घरवाली लक्ष्मी के मरते ही राधे का मन और घर दोनों उजड़ गए। घर-घर न लगकर गरीबी, अभाव और गंदगी की पाठशाला लगने लगा। लक्ष्मी के मर जाने के बाद राधे ने दोनों बेटियों को छाती से लगाकर पाला था। बड़ी लड़की सोना की शादी होने पर वह रुक-रुककर रोया था। सोना की शादी के बाद यह छोटी लड़की रमैनी ही उसका सहारा है।

यह गाँव कुँआरी वधुओं के नाम से प्रसिद्ध है। इस गाँव को यह संबोधन कब मिला। राधे को याद नहीं। आँखें खोलते ही उसने अपनी माँ सुनारो को देखा, जो गाने-बजाने के धंधे में थी। सुनारो को राधे के बापू रमेश से बहुत प्यार था। वह हमेशा उन्हें चंपा के बापू कहती। चंपा राधे की बड़ी बहन थी। देखने में दुबली-पतली साँवले सलौने रूप वाली। सुनारो मन से बहुत भोली थी। सुनारो अपने आप को कलाकार कहती थी, जब भी कोई उसे नाचने-गाने वाली कहता तो वह तड़प उठती और रमेश से कहती, 'चंपा के बापू! हम कलाकार हैं, नाचना-गाना हमारी कला है। इसी से हमारी पहचान है। हम कोई व्यापार नहीं करते, चोरी नहीं करते।' रमेश सुनारो की विद्वता भरी बातें सुन उस पर रीझ जाता। वह सुनारो को प्यार भरी झिड़की देते हुए कहता, 'अरी पगली हम थोड़े ही कलाकार हैं, कलाकार तो वे हैं जो बड़े-बड़े मंच पर नाचते-गाते हैं, जिन्हें देखने-सुनने बड़े-बड़े लोग आते हैं। उनकी तरफ कोई टेढ़ी नजर नहीं देख सकता। और एक हम हैं कि हमारी औरतों को हर कोई छूना-चखना चाहता है। भला हम काहे के कलाकार।'

सुनारो रमेश की बातों का दर्द अपनी छाती में उठता महसूस करती। सुनारो रमेश से कहती, 'चंपा के बापू मेरा मन कहता है कि मैं बस तुम्हारे लिए ही गाऊँ।' कहते-कहते सुनारो की आँखों में चमक आ जाती। फिर वह ऊँची तान छेड़ देती,

'...अमवा की छाँह तले
आजा मेरे बालम प्यारे...
बिन तेरी सूरत देखे मेरे प्राण हारे
हो-जी-हो...'

तान छेड़ते समय उसकी ताल-लय पर उठती गिरती साँसें, झुकी पलके पूरे माहौल को मदहोशी से भर देतीं। पक्षी तक चहकना भूल जाते। उस समय सुनारो की भाव-भंगिमा देख लगता, जैसे किसी विरहणी के प्यासे प्राण उसके अंदर समा गए हों। यह गाना सुनारो केवल रमेश के लिए गाती थी। उस गाने को सुन रमेश मदहोश हो, सुनारो के गालों को चूमते हुए कहता 'सुनारो, आज तो तूने गाने में प्राण उड़ेल दिए, अरी मेरी लाडो! तुझे मेरे घर में नहीं। किसी ऊँचे घराने में होना चाहिए था। और अगर मैं धनवान होता तो सारी दुनिया की खुशियाँ तेरे कदमों में डाल देता।' पति के प्यार से तप्त सुनारो लज्जा से कहती 'मेरी नजर में तुमसे ऊँचा और कोई नहीं है, मेरी कला के असली पारखी तो तुम ही हो, बाकी तो सब खरीदार हैं।'

ऐसे ही एक दिन सुनारो ने चंपा के बापू से कहा 'सुनो जी, क्या हम शहर जा कर नहीं रह सकते, वहाँ मैं अपने बच्चों को पढ़ा-लिखा कर इंसान बनाऊँगी, तुम ये तबला बजाना छोड़कर मजदूरी करना, और जब तुम थककर लौटोगे तो मैं तुम्हें ढेर सारा प्यार करूँगी, और अपना घर संभालूँगी।' सुनारो में जहाँ भावुकता थी रमेश में वहीं व्यावहारिकता। रमेश कहता 'पगली, यहाँ तो हमारा गाँव है, नाते-रिश्तेदार हैं, सगे संबंधी हैं, भला वहाँ कौन होगा। वहाँ हम भूखों मर भी जाएँ तो हमें कौन देखने वाला है। शहर हमें अजगर की तरह निगल जाएगा। मैं थोड़े और ग्राहक जुटाकर पैसा इकट्ठा कर लूँगा। फिर उसी से थोड़ा-थोड़ा इकट्ठा कर एक दुकान खोल लूँगा।' रमेश की बातें सुनारो की आँखों में सतरंगी सपने जगा देतीं।

माँ के इसी गाने-बजाने से राधे और उसकी बड़ी बहन चंपा का पेट पलता। बापू माँ का हाथ बँटाता था और लोगों को जुटा कर लाता था। जब वह तीन-चार बरस की ही होगी, उसे याद है घर में पंडित बदरीनारायण का खूब आना जाना बढ़ गया। पंडित बदरीनारायण डील-डौल से ऊँचे तगड़े थे। माँ उनके सामने निरीह-सी चिड़िया लगती। बदरीनारायण माँ बापू को धर्म शास्त्र की खूब पट्टी पढ़ाते। उनकी बातों में विद्वता का रौब होता। बापू भी उन्हीं दिनों न जाने कहाँ गायब हो गए चारों तरफ लोगों को खोजने भेजा, कुछ पता नहीं चला। बाद में किसी से पता चला। आखिरी बार लोगों ने बापू को पंडित बदरीनारायण के साथ देखा था। उसने माँ की बेबसी देखी। खामोश पीली होती आँखे देखीं। लोग माँ का गाना सुनने आते। नोट लुटाते। बदरीनारायण सब नोट बटोर कर रख लेता। जब माँ के सामने अधेड़ बदरीनारायण बड़ी होती चंपा जीजी के गाल पर हाथ फेरता तब माँ तड़प उठती। उस समय उसे बापू की बहुत याद आती। वह उसकी याद में रो पड़ती, उसकी करूण पुकार चारों ओर गूँज उठती

अमवाँ की छहियाँ तले आजा मेरे बालम प्यारे
बिन सूरत देखे तेरी मेरे प्राण विकल बेचारे
हो-जी-हो-ओ...
दिल में जो घाव दिए तूने बेदर्दी
दिखाने में सदियाँ बीत जाए
मन तो खाली मटके सा
उलटूँ तो सबरा रीता जाए।
हो-जी-हो-ओ...

माँ का गान जितना करुण था रोना उतना ही मार्मिक। माँ को तिलतिल मरते देख राधे की आँख में आँसू आ जाते। बापू के जाने के बाद माँ लगातार सूखती गई और एक दिन वह भी बापू के पास चली गई। जाते-जाते राधे का हाथ चंपा को पकड़ा गई। चंपा पर हल चलाकर छोटे भाई को पालना चाहती

थी। पर ऐसा नहीं हो सका, पूरी बिरादरी आगे आकर खड़ी हो गई। नाते-रिश्तेदारों ने कहा जब घर में लड़का है तो लड़की क्यों हल चलाएगी। चंपा ने लाख बार कहा कि राधे अभी बहुत छोटा है वह हल केसे चलाएगा। पर बिरादरी के आगे उसकी एक ना चली, बिरादरी वालों का तर्क था कि चंपा को वही करना चाहिए जो हमारी जाति की औरतें करती हैं।

आखिर चंपा कब तक घर में भूखी रहती, वह खुद तो भूखी रह सकती थी पर अपने भाई को कैसे भूख से तड़पता देखती। आखिर में उसे नौटंकीवाली बनना ही पड़ा। माँ ने मरते वक्त राधे से कसम ली थी कि वह नौटंकी कला को कभी घर में नहीं घुसने देगा। राधे ने सोच लिया था कि चाहे इसे कोई कला कहे या पेट भरने का साधन वह इस नौटंकी कला को घर में नहीं घुसने देगा।

चंपा जीजी को सबके सामने नाचने-गाने से वह रोक नहीं पाया, पर जब राधे की बड़ी लड़की सोना की शादी के बाद उसका पति सूरज यह कहकर छोड़ गया कि 'यह गाना-बजाना नहीं करेगी तो मेरे किस काम की।' शुरू-शुरू में सोना ने सूरज का विरोध किया था पर उसका यह विरोध ज्यादा दिन तक नहीं चल सका और वह अपने पति के पास लौट गई। सोना के गाने-बजाने की बात सुन वह अंदर तक टूट गया था। अब भी उसके पास एक आस बची थी उसकी छोटी बेटी रमैनी, वह रमैनी को पढ़ा-लिखा कर बहिनजी बनाना चाहता था। पर रमैनी की बातें सुनकर आज उसे अपना सपना टूटता दिखाई दिया, दु:ख से राधे ने खाट पकड़ ली, रमैनी के खूब सेवा करने पर भी वह बच न सका, शायद उसके जीवन का सबसे कीमती सपना जो टूटा था। मरा हुआ राधे माँ की एक कसम तो पूरी न कर पाया पर वह अपनी बड़ी बेटी से दूसरी कसम लेता हुआ बोला 'बेटी रमैनी को लेकर गाँव में मत रहना। शहर चली जाना जब तक यह गाँव हैं तब तक यह नाचने बजाने का कोढ़ हमारे माथे पर लगा रहेगा, बेटी इस कोढ़ से मुक्ति पानी है।'

बापू के मरने के बाद रमैनी अकेली रह गई सो सोना जीजी और जीजा खेत बेचकर उसे अपने घर ले गए। सोना जीजी ने उसे पढ़ाना चाहा पर उसने पढ़ने से मना कर दिया। सोना जीजी ने रमैनी को बड़े प्यार से समझाते हुए कहा बापू की बड़ी आस थी कि तू पढ़-लिखकर बहिनजी बने, क्या तेरे लिए इतना भी मुश्किल है। बापू ने हमारे लिए क्या नहीं किया, भरी जवानी में बापू चाहते तो दूसरी शादी कर सकते थे, पर बापू तो हमें देखकर ही जीते रहे। मैं और तेरे जीजा तुझे जी जान से पढ़ाएँगे। पर सोना की बातों का रमैनी पर उलटा असर हुआ और उसने रात-दिन एक ही रट लगाए रखी कि मुझे पढ़ाई नहीं करनी, मुझे भी तुम्हारी तरह गाना-बजाना सीखना है। हार कर जीजी ने उसके लिए एक संगीत-मास्टर रख दिया। मास्टर चुन्नीलाल ने इस बस्ती की कई लड़कियों को नाचना-गाना सिखाया था। सोना जीजी भी उनमें से एक थीं। उनका बस्ती के सभी घरों में आना-जाना था। वह भरोसे के आदमी थे। रमैनी बचपन से ही गाने-बजाने की शौकीन होने के कारण पूरे मनोयोग से संगीत सीखने लगी। संगीत सीखते-सीखते रमैनी ने महसूस किया कि आजकल मास्टर चुन्नी उसे गहरी ललचाई नजरों से देखता है,एक दिन जब जीजी-जीजा बाहर गए तो चुन्नी ने रमैनी से कहा रमैनी आज मैं तुम्हें एक नया गाना सिखाऊँगा। जरा तुम ध्यान से सुनना। चुन्नी गला खखार कर गाने लगे... निर्दयी तुझे दिल में बसाया क्यों अपना सुख-चैन गँवाया क्यों मेरी कादारी की हर पल परीक्षा ली तूने अपनी बेवफाई को हर पल छुपाया तूने गाना गाते-गाते मास्टर चुन्नी का चेहरा तन गया, आँखे लाल हो गईं, वह रमैनी को अपने पास खींचते हुए बोला रमैनी, मैं तुम्हारे लिए कितना पागल हूँ। मैं तुम्हें कैसे बताऊँ। मैं तुम्हें नाचने गाने वालियों में रानी बना दूँगा, तुम्हारे दाम बढ़ जाएँगे, नोटों की बरसात हो जाएगी। बस एक बार मेरी हो जाओ, रमैनी की आँखों के सामने अंधेरा छा गया। उसे मास्टर के रूप में भेड़िया नजर आया। रमैनी मास्टर को धक्का मार एक ओर खड़ी हो गई और चिल्लाकर बोली क्या करते हो मास्टरजी। मैं तो आपकी बेटी के बराबर हूँ, मास्टर अपना वार उलटा जाते देख गुस्से से बेकाबू होकर बोला 'साली, हरामजादी, नखरे दिखाती है। बेटियाँ, तेरे जैसी थोड़े ही होती हैं। तेरे जैसी तो बस रंडी होती है। आज नहीं तो कल तुझे रंडी बनना ही है तो मुझसे ही रिश्ता क्यों नहीं बना लेती। किसी को पता भी नहीं चलेगा। वासना में अंधे गुरुजी ने रमैनी को झपट्टा मार नीचे गिरा लिया। अपने पैने पंजों से रमैनी की देह लहुलुहान कर दी। आखिरकार बाज अपने मकसद में कामयाब हो ही गया।

मास्टर चुन्नी शरीर के साथ उसके मन पर भी घाव छोड़ गया। उसी दिन से रमैनी का नया जन्म हो गया। उसने अपने औरत होने के डर को जीत लिया, अब उसके सामने कैसा भी आदमी आए, वह नहीं डरती थी, बल्कि वह परिणाम को जानती थी कि क्या होगा।

रमैनी पूरे पाँच दिन बिन खाए-पिए चारपाई पर आँसू बहाती रही। अंत में दृढ़ निश्चय के साथ सोना जीजी से बोली, 'जीजी, अब हमारा कमरा ठीक करा दो। हम अलग काम करेंगे। रमैनी अब रमैनी देवी बन गई। जल्दी ही उसके रूप, आवाज और नैन-सैन का डंका चारों ओर बजने लगा। वह आँखों में सुरमा डालकर, पान मुँह में दबाकर जब अपनी पिनक में गाती, 'का से इनायत से चोट लगती है, बिखरा फूल हूँ हवा से चोट लगती है।

तो लोग उस पर नोटों की बरसात करने लगते, उसकी आवाज की कटार लोगों के दिल को छेद देती। ऐसे ही उसके रूप और आवाज की कटार उसके एक ग्राहक रामअवतार ठाकुर के दिल में उतर गई। पतला-दुबला रामअवतार अपने दोस्त के साथ रमैनी के गाने की तारीफ सुनकर आया था। पर रमैनी का रूप रंग, आवाज पर मुग्ध हो वहीं रुक गया। रमैनी को भी अच्छा लगा कि कोई उसके सिर पर है, रमैनी का गाना केवल रामावतार के लिए ही रह गया, रमैनी को लगा यही जीवन अच्छा है। रमैनी रामअवतार के साथ घर बसाने के सपने देखने लगी। जब रामअवतार ने रमैनी से एक दिन विवाह का प्रस्ताव रखा तो रमैनी को अपने जीवन की सार्थकता नजर आने लगी। अपने मनोभावों को दबाते हुए उसने कहा–'ठीक है हमें शादी तो करनी ही है तो तुमसे ही क्यों ना करे तुम हमारी पहली पसंद हो, पर हमारी एक शर्त है, हम तुम्हारे माँ बाप के घर जाकर रहेंगे। उनकी बहू और तुम्हारी पत्नी बनकर, रखैल बनकर नहीं।' रामअवतार रमैनी के इस रूप से वाकिफ नहीं था। वह उसकी शर्त सुन चिंता में पड़ गया, उसे डर था रमैनी को गाँव ले जाने से उसके पुरखों की इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी, उसकी थू-थू हो जाएगी। ठाकुर पर रमैनी को पाने का भूत सवार था इसलिए उसने अपने शादी-शुदा होने की बात भी छुपाई थी। रामअवतार के भीतर बैठे डर और भीरुता ने उसके अंदर सोए पुरुषत्व को जगा दिया। उसने हिम्मत बटोरते हुए रमैनी को कहा-'गाँव में हमारी पत्नी है, हमारे माता-पिता है। क्या तुम उन के साथ रह सकोगी? रह सकोगी तो चलो? नहीं तो हम तुम्हें यहाँ कोई कमी नहीं रहने देगे।' रमैनी तो जैसे आसमान से जमीन पर गिरी। अगर रामवतार शादीशुदा है तो पहले क्यों नहीं बताया। उसने कभी नहीं चाहा था कि वह ऐसे आदमी के साथ रहे जो पहले से शादीशुदा हो। उसके साथ बड़ा धोखा हुआ है। पर अब वह क्या करे। रमैनी के लिए इधर कुआँ उधर खाई वाली स्थिति थी। वह कुएँ से बचती तो खाई में गिरती। मरना दोनों ही स्थिति में था। उसने मन में सोचा जब ओखली में सिर दिया तो मूसल से क्या डर. दृढ़ निश्चय से वह रामअवतार से बोली–'तो ठीक है हम गाँव जरूर चलेंगे पर हमारी एक शर्त है। जितने बच्चे तुम्हारे ठकुराइन से होंगे, उतने ही हमसे भी होंगे, जितनी जमीन ठकुराइन के बच्चों की होगी, उतनी ही मेरे बच्चों की भी। अगर तुम्हें ये शर्त मंजूर है तो मैं चलने को तैयार हूँ. और जैसा तुम कहोगे वैसा ही करूँगी।' रामअवतार किसी तरह रमैनी को खोना नहीं चाहता था, इसलिए उसने रमैनी की सभी शर्ते मंजूर कर ली।

रामवतार ने रमैनी को सामान बाँध ने को कहा। गाँव पास आते ही रामअवतार ने रमैनी को घूँघट काढ़ने को कहा। गाँव पहुँचते ही शोर मच गया रामवतार नौटंकियाँ वाली को ब्याह लाया है। जिसने जहाँ जिस अवस्था में सुना वहीं से भागा चला आया। घर के सामने हुजूम लग गया। माँ-बाप ने रामअवतार से सारे संबंध तोड़ लिए। धीरे-धीरे दिन बीतने लगे. हवेली उसे बंद कोठरी के समान लगने लगी। हवेली में ठकुराइन का व्यवहार बड़ा अजीब था, वह ठाकुर से बात न करती थी। रमैनी से तो वह बोलती-बतियाती, हँसती-खिलखिलाती पर ठाकुर को पास न आने देती। रमैनी के लाख पूछने पर भी वह अपने मन की थाह ना लेने देती। ठकुराइन का रहस्यमयी व्यक्तित्व रमैनी की समझ से परे था। एक दिन तो हद हो गई, उसने रमैनी को ठाकुर के कमरे मे घुसा दिया। वह रात-दिन इसी उधेड़ बुन मे रहती आखिर ठकुराइन ठाकुर से बात क्यों नहीं करती? साल दर साल बीत गए। रमैनी की गोद दो बच्चों से भर गई। गाँव में होली का गुल-गुपाड़ा मचा था, ठाकुर का भी पूरा परिवार आया, उसके तीनों के तीनों भाई आए. ठकुराइन बड़ी थी। देवर भाभी के पैरों में गुलाल डालते रहे है, यह क्या बीच वाले ने भाभी के पैरो में गुलाल क्यों नहीं डाला। इसी सोच में रमैनी चूल्हा जलाने के लिए लकड़ी लेने घर के पीछे की कोठरी में गई। ये क्या कोठरी में देवर भाभी। ठकुराइन अचानक रमैनी को कोठरी में आया देख घबरा गई। ठकुराइन के इस रूप को देख रमैनी ने घृणा से मुँह फेर लिया। उफ् तो ये है अपने को बड़ी बिरादरी कहने वालों के चरित्र। वह कोठरी से बाहर निकलने के लिए उठी, तभी ठकुराइन रमैनी की बाजू पकड़ बोली-'तुम जानना चाहती थीं ना, मैं ठाकुर से क्यों नहीं बात करती तो सुनो मेरी पसंद ठाकुर का छोटा भाई सुखबीर था, जो तुम्हारे सामने खड़ा है। पर ठाकुर को मैं पसंद थी।

ठाकुर ने मेरे गरीब माँ-बाप को रुपयों की थैली दिखाकर खरीद लिया। सबकुछ जानते हुए भी निर्दयी ने हमारा प्यार तोड़ दिया। मुझसे जबरदस्ती शादी कर ली। अग्नि साथ फेरे लेते समय मैंने कसम खाई थी कि आज से मैं इसके घर रहूँगी, मगर पत्नी बनकर नहीं, बल्कि दासी की तरह। प्राण जाने तक अपना तन और मन ठाकुर को कभी नहीं दूँगी। यह कहते-कहते ठकुराईन की आँखों से आँसू आ गए। वर्षों से जमा दुख आज मौका पाते ही मोम की तरह पिघलने लगा।

अब ठाकुर का असली रूप उसके सामने था। आज उसकी समझ में आया ठकुराइन क्यों ठाकुर से बचती है। क्यों उसके कमरे में ठाकुर को भेज कुंडी लगा देती है... कि ठाकुर का प्रेम उसके लिए बस एक मजबूरी था, सब कुछ एक नाटक भर था। रमैनी को यह सोचते ही रुलाई आ गई कि वह उसकी वासनापूर्ति के लिए शिकार बनी थी। उस दिन से रमैनी का मन ठाकुर के घर से उठ गया वह अनमनी-सी रहने लगी। एक दिन उसने ठाकुर को कहा, 'अब मैं इस घर में नहीं रहूँगी। मुझे जीजी के पास छोड़ दे।'

ठाकुर ने लाख मनाने की कोशिश की पर वह शहर आ ही गई। उसने ठाकुर को कहा चिंता मत करो हम तुम्हारे ही नाम की ही माँग भरेंगे तुम हमें खर्च भेज दिया करो। एक साल तक ठाकुर का आना-जाना रहा, फिर उसका आना-जाना बंद हो गया। पहली लड़की पाँच साल की, दूसरा लड़का तीन साल का और तीसरा एक साल का। खर्च केसे चले, गहने बेचकर घर का खर्च चल रहा था। आज ठाकुर फिर घर आया है शराब पीकर। छोटे बच्चे को बुखार है। ठाकुर बार-बार नशे में चिल्ला रहा है ये मेरा नहीं है, साली रंडी ये किसका पाप है, बोल ये किसका पाप है? रमैनी ठाकुर के इस रूप को देखकर क्षुब्ध है, ठाकुर बच्चे को रमैनी के हाथ से छीनकर फेंकना चाहता है, अब उसके अंदर ठाकुर के अत्याचार सहने की सीमा समाप्त हो रही थी। वह गुस्से से थर्रा उठी, वह ठाकुर से गरजकर बोली, 'खबरदार अगर मेरे बच्चे को हाथ लगाया तो तेरा खून कर दूँगी, मुझे रंडी कहने वाले तू कितना बड़ा भड़वा है अपने आप से पूछ।' रमैनी का गुस्सा सातवें आसमान पर था। वह रामअवतार की छाती पर चढ़ बैठी और गुस्से में उसे गाली देते हुए तड़ातड़ थप्पड़ों से पीटने लगी। उस दिन ठाकुर की बड़ी बेइज्जती हुई। उसने फिर कभी लौटकर मुँह नहीं दिखाया। अब अकेली रमैनी नाच-गा अपने बच्चे पाल रही है। आज जब लड़की ने कहा कि मैं स्कूल नहीं जाऊँगी, तो रमैनी क्रोध से भर उठी। उसने मन में कसम खाई कि वह अपने बच्चों को पढ़ा कर रहेगी चाहे जो भी बाधा आए। वह मीनू का हाथ खींचते हुए बोली, 'चल दिखा मुझे, कौन है वो टीचर जो तुझे पीछे बैठाएगी, गोबर गणेश कहेगी उसे अब मैं देखूँगी।'

रमैनी मीनू का हाथ पकड़े स्कूल की तरफ जा रही थी अपनी तीसरी कसम पूरी करने।❑

तथागत बुद्ध का महिलाओं के लिए दृष्टिकोण*

अजान सुजातो के अनुसार, प्राचीन ग्रंथों में गरुधम्मों में सबसे कठोर गरुधम्म, जिसमें प्रत्येक भिक्षुणी को प्रत्येक भिक्षु को प्रणाम करना अनिवार्य है, को बुद्ध ने उस समय की प्रथा के कारण स्थापित किया था। आधुनिक विद्वान इस बात पर संदेह करते हैं कि यह नियम वास्तव में बुद्ध के समय का है भी या नहीं। उनका मानना है कि यह नियम बाद में बनाया गया होगा। यह एक संभावित तर्क हो सकता है क्योंकि ये नियम तभी लिखे गए जब लोग साक्षर होने लगे थे। प्राचीन काल में, हम जानते हैं कि पुरुष सबसे पहले साक्षर हुए थे। महिलाओं को यह अवसर बहुत बाद में मिला। इसलिए, यह संभव है कि ये नियम पुरुष प्रधान समाज द्वारा लिखे गए हों। हम मान सकते हैं कि सत्ता में रहने वाला व्यक्ति निश्चित रूप से ऐसे नियम लिखेगा जो उसके हित में हों। पुरुषों ने महिलाओं की तुलना में अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित करने के लिए ये नियम लिखे होंगे। इसके अलावा, जैन धर्म में भी ऐसा ही एक नियम मिलता है। गौतम बुद्ध की शिक्षाओं के अभिलेख पाली ग्रंथ के अगन्ना-सूत्र के कुछ टीकाकार इसकी व्याख्या इस प्रकार करते हैं कि यह मानव जाति के पतन के लिए महिलाओं को जिम्मेदार ठहराता है। यह दृष्टिकोण एक लंबी चर्चा का विषय हो सकता है। मेरा मानना है कि यह महिलाओं की नहीं बल्कि पुरुषों की इच्छाएं हैं जिनके कारण ऐसा पतन हुआ है। मेरा दृष्टिकोण बौद्ध व्याख्या में भी अपनी जगह पाता है क्योंकि यह भी महिलाओं के बजाय सामान्य रूप से वासना को पतन का कारण बताता है।

https://doi.org/10.4236/oalib.1103578

*अर्चना पौडेल और क्यून डोंग.(साउथईस्ट यूनिवर्सिटी, ननजिंग, चीन)बौद्ध धर्म में महिलाओं के साथ होने वाला भेदभाव : एक नैतिक विश्लेषण, ओपेन एक्सेस लाइब्रेरी जर्नल, खंड 4, अंक 4, अप्रैल 26, 2017